(1.)

रजिया सुल्तान

Ashish kumar Thakur
B.A. II, History (H), paper-III
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

इल्तुतमिश अपने पुत्रों की कमजोरियां एवं अयोग्यता से भली-भाँति परिचित था। इसलिए उसने अपने जीवन काल में ही अपनी पुत्री रजिया बेगम को अपना उत्तराधिकारी चुना। वह कहा करता था कि —

" मेरे पुत्र सुन्दरियां एवं विलासिता के प्रेमी हैं और उनमें से कोई भी सुल्तान बनने के योग्य नहीं. वे शासन चलाने के लायक नहीं, मेरी मृत्यु के बाद आप पाओगे कि मेरी पुत्री रजिया से अधिक शासन चलाने में समर्थ अ कोई और नहीं।"

लेकिन अधिकांश अमीरों को यह पसंद नहीं था कि उनके ऊपर एक स्त्री शासन करें।

इसलिए उन्होंने इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसकी इच्छा के विरुद्ध शाहजादे रुकनुद्दीन फिरोज को रजिया बेगम के स्थान पर सुल्तान बनाया लेकिन वह एक अयोग्य ही साबित हुआ।

रुकनुद्दीन फिरोज शराब और सुन्दरियों में व्यस्त था जबकि शासन की कार्यभार उसकी माँ शाह तुर्कान ही संभालती थी। उसने अपने विरोधियों से मुक्ति पाने में काफी जल्दबाजी की। उसने किसी को पराजित किया तो किसी को कत्ल करवाये। उसने इल्तुतमिश के नवजात पुत्र कुतुबुद्दीन को बेरहमी से कत्ल करवा दिया और रजिया को भी कत्ल करवाने का असफल प्रयास किया। भाग्यवश रजिया जान बचाने में सफल रही। लेकिन इस घटना से राज्य में अनिश्चितता और अराजकता की स्थिति पैदा कर दी। रुकनुद्दीन और शाह तुर्कान को सिंहासन से उतार दिया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया। जेल में रुकनुद्दीन की मृत्यु हो गई।

दिल्ली की सुल्तान की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर रजिया लाल वस्त्र पहनकर (न्याय की मांग का प्रतीक) नमाज के अवसर पर जनता के सम्मुख उपस्थित हुई। उसने शाह तुर्कान के अत्याचारों एवं राज्य में फैली अव्यवस्था का वर्णन किया तथा आश्वासन दिया कि शासक बनकर वह शांति एवं सुव्यवस्था स्थापित करूंगी।

Ashish

Scanned with CamScanner

राजिया से तुर्क अमीर और अन्य व्यक्ति प्रभावित हो उठे। एवं राजिया को सुल्तान घोषित कर दिए।
राजिया दिल्ली की प्रथम व अंतिम मुस्लिम महिला शासिका थी राजिया ने सैनिक वेषभूषा धारण की, पर्दा प्रथा छोड़कर पुरुष वेषभूषा कुबा (कोट) व कुलाहा (टोपी) पहनकर दरबार में बैठती थी। राजिया घोड़े पर सवार होकर युद्ध के मैदान में जाती थी। सिंहासन पर बैठते ही राजिया ने कूटनीति से काम लिया और अमीर वर्ग में फूट डाल दी। राजिया ने कुछ सरदारों को अपने अपनी तरफ मिला लिया और कुछ को उसने समाप्त करवा दिया। उसने अबीसीनिया निवासी जलालुद्दीन याकुत को अमीर-ए आखुर अर्थात अश्वशाला का प्रधान नियुक्त किया। इससे अमीर वर्ग नाराज हो गए थे।
भटिण्डा के सूबेदार अल्तुनिया ने विद्रोह कर दिया। राजिया इस विद्रोह को दबाने के लिए दिल्ली से बाहर निकली, उसे रास्ते में ही अलतुनिया ने कैद कर लिया और याकुत को मार डाला। अल्तुनिया ने राजिया से शादी कर लिया, इसी बीच अमीरों ने बहरामशाह को सुल्तान घोषित कर दिया अब राजिया अपने पति के साथ दिल्ली की सिंहासन प्राप्त करने के लिए चल पड़ी। लेकिन वह कैथल के पास कुछ अज्ञात डाकुओं द्वारा राजिया और अल्तुनिया की हत्या कर दिया गया।

समकालीन लेखक मिनहाज उस सिराज ने राजिया के संबंध में लिखा है कि — "वह एक महान शासक, बुद्धिमान, न्यायप्रिय, दयालु, राज्य के हित का ध्यान रखने वाली, अपना प्रजा की रक्षक और महान सेनापति भी थी यद्यपि राजिया एक कुशल प्रशासक और महान सेनापति थी, परन्तु उसका स्त्री होना ही सबसे बड़ा दोष था।"

इतिहासकार राजिया और याकुत के प्रेम संबंध को नकारता है जो लेखक इसामी द्वारा आरोप लगाया गया था।

Scanned with CamScanner